www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-1* *January 2025***

रामचरितमानस की पात्र परिकल्पना

प्रिया पाण्डेय

शोधार्थी (हिन्दी विभाग), नेहरु ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज

डॉ0 सव्यसाची

एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग संकायाध्यक्ष, कला नेहरु ग्राम भारती (मानित विश्वविद्यालय), प्रयागराज

सारांश

रामचरितमानस भारतीय साहित्य का एक महत्वपूर्ण महाकाव्य है, जिसमें पात्र परिकल्पना एवं चरित्र चित्रण का अद्भुत संतुलन दिखाई देता है। किसी भी महाकाव्य की सफलता उसमें चित्रित पात्रों की सजीवता एवं उनके व्यक्तित्व की गहराई पर निर्भर करती है। गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में पात्रों की परिकल्पना इस प्रकार की है कि वे केवल धार्मिक या पौराणिक पात्र नहीं रह जाते, बल्कि एक सामाजिक, सांस्कृतिक और मानवीय चेतना के वाहक बन जाते हैं। तुलसीदास ने राम, सीता, हनुमान जैसे आदर्श पात्रों के साथ–साथ दशरथ, कैकेयी, विभीषण जैसे सामान्य पात्रों का भी मनोवैज्ञानिक एवं यथार्थपरक चित्रण किया है। आचार्य पं. रामचंद्र शुक्ल ने मानस के पात्रों को सात्विक, राजस और तामस प्रवृत्तियों में विभाजित किया है, जिससे उनके गुण–अवगुण का तुलनात्मक विश्लेषण संभव होता है। डॉ. गुप्त एवं डॉ. राम प्रकाश अग्रवाल ने पात्र वर्गीकरण की एक व्यवस्थित प्रक्रिया प्रस्तुत की है, जिससे मानस के चरित्रों का अध्ययन सरल होता है। प्रमुख और गौण पात्रों की अवधारणा भी कथानक की संरचना में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गौण पात्र कथानक को गति प्रदान करते हैं तथा प्रमुख पात्रों के उद्देश्य को स्पष्ट करते हैं। डॉ. शम्भुनाथ सिंह के अनुसार तुलसीदास ने अपने पात्रों का निर्माण न केवल धार्मिक एवं आदर्शवादी दृष्टिकोण से किया है, बल्कि प्रत्येक पात्र को एक कोटि का प्रतिनिधि मानकर उनकी विशिष्टताओं का भी सूक्ष्म निरूपण किया है। रामचरितमानस न केवल धार्मिक ग्रंथ के रूप में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं समाज का प्रतीकात्मक दस्तावेज भी है। तुलसीदास के पात्रों में तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों की छवि देखी जा सकती है। यह पात्र परिकल्पना रामचरितमानस को केवल एक पौराणिक आख्यान न बनाकर उसे एक सार्वकालिक एवं सार्वभौमिक महाकाव्य के रूप में स्थापित करती है।

परिचय–

भारतीय साहित्य में रामचरितमानस एक अनुपम और कालजयी महाकाव्य है, जिसकी रचना गोस्वामी तुलसीदास ने की। यह ग्रंथ केवल धार्मिक आस्था और भक्ति का स्त्रोत नहीं है, बल्कि इसमें तत्कालीन समाज, संस्कृति और मानव मूल्यों की गहरी झलक मिलती है। रामचरितमानस की कथा श्रीराम के जीवन चरित्र पर आधारित है, लेकिन इसका प्रभाव केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित नहीं है। इसमें जो पात्रों की परिकल्पना और चरित्र चित्रण हुआ है, वह इसे भारतीय साहित्य की अमूल्य धरोहर बनाता है। तुलसीदास ने अपने समय की सामाजिक, सांस्कृतिक और नैतिक चेतना को इन पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

महाकाव्य में पात्र परिकल्पना का विशेष महत्व होता है। पात्र किसी भी आख्यान के प्राण होते हैं। यदि पात्र सजीव और प्रभावशाली न हों, तो कथानक निरर्थक हो जाता है। रामचरितमानस में तुलसीदास ने प्रमुख और

गौण पात्रों का ऐसा प्रभावी चित्रण किया है, जिससे कथा में रोचकता, शिक्षाप्रदता और गूढ़ अर्थवत्ता बनी रहती है। राम, सीता, लक्ष्मण, भरत, हनुमान, रावण, विभीषण, सुग्रीव आदि पात्रों को तुलसीदास ने विशिष्ट चरित्र और व्यक्तित्व प्रदान किया है। उन्होंने प्रत्येक पात्र को उसकी भूमिका, गुण–दोष और मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के आधार पर चित्रित किया है। इसी कारण रामचरितमानस के पात्र केवल पौराणिक आख्यान तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे सामाजिक और नैतिक आदर्शों के प्रतीक बन जाते हैं। आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल ने रामचरितमानस के पात्रों को सात्विक, राजस और तामस प्रवृत्तियों के आधार पर विभाजित किया है, जिससे उनके गुणात्मक भेद स्पष्ट होते हैं। डॉ. रामप्रकाश अग्रवाल और डॉ. गुप्त ने पात्रों के वर्गीकरण को और अधिक व्यवस्थित ढंग से प्रस्तुत किया है, जिससे अध्ययन में सरलता आती है। डॉ. शम्भुनाथ सिंह के अनुसार तुलसीदास के पात्र धार्मिक और आदर्शवादी दृष्टिकोण से रचे गए हैं, जिनमें प्रत्येक पात्र किसी विशेष कोटि का प्रतिनिधित्व करता है। रामचरितमानस के पात्र तत्कालीन समाज और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हैं। वे इतिहास, धर्म और नीति के आदर्शों को जीवन्त करते हैं। तुलसीदास ने अपने पात्रों के माध्यम से एक ऐसे समाज की कल्पना की है, जहाँ धर्म, सत्य, करुणा और कर्तव्य का सर्वोच्च स्थान हो। यही कारण है कि रामचरितमानस आज भी प्रासंगिक और प्रेरणास्पद बना हुआ है।

पात्र परिकल्पना–

किसी भी प्रबन्ध काव्यात्मक दृष्टि में पात्रों की परिकल्पना अनिवार्य है। पात्रों के अभाव में रचना निर्जीव होगी और महाकाव्य के विशाल समाज में विविध पात्रों का एक संकुल कोलाहलपूर्ण समुदाय होता है उन सभी पर दृष्टिपात एक विहंगम दृष्टि से भी कर पाना असंभव है।1 परन्तु कथानक या आख्यान के सजीव घटक पात्र ही होते हैं, और उनके निर्माण द्वारा ही रचनाकार अपने प्रयोजन एवं उददेश्य को अभिव्यक्ति कर पाता है। पात्र की दृष्टि में पात्र का व्यक्तित्व प्रस्तुत करना पड़ता है, उसका चरित्र बतलाना पड़ता है।[2]

प्रख्यात कथानक में तो चरित्र चित्रण के लिए कवि के सामने अनेक विवशतायें होती हैं, क्योंकि परस्पर बंधन के कारण उसका कल्पना क्षेत्र बहुत सीमित हो जाता है, किन्तु समर्थ महाकवि प्रतिभा के बल पर किसी प्रकार के भी बंधन से कभी विवश नहीं बैठते है।[3] अतः पात्र की परिकल्पना पात्र के चरित्र के आधार पर की जा सकती है। ''हमारे गोस्वामी जी ऐसे ही समर्थ महाकवि हैं और उनके चरित्र चित्रण के संबंध में यह कहना पुनरावृत्ति न होगी कि उन्होंने उस दिशा में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है।[4]

गोस्वामी तुलसीदास के पात्रों के चरित्र चित्रण के सम्बन्ध में डॉ0 गुप्त ने लिखा है कि ''कवि ने चरित्रों का चित्रण बड़ी ही सुकुमार तूलिका से किया है। उसकी मौलिक प्रवृत्तियों का परिचय इस क्षेत्र में सामान्यतः आवेश, अविचार, अधीरता से आधार ग्रंथों के परिवेश को मुक्त कर उन्हें एक व्यापक उदार दृष्टि प्रदान की है। हृदय की विशालता आदि सभी गुण उनके चरित्रों में मिलते है।''[5]

राम चरित मानस में पात्रों की विविधता को देखते हुए डॉ0 राम प्रकाश अग्रवाल ने निम्न प्रकार से पात्रों का वर्गीकरण किया है।[6]

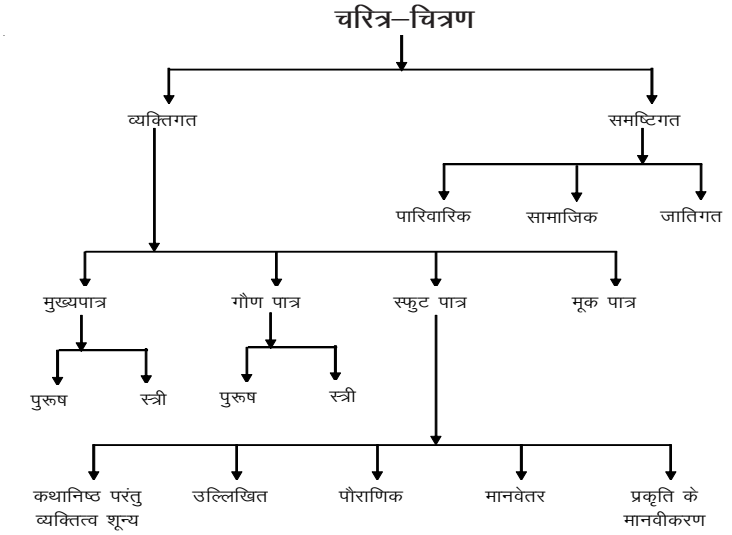

उक्त वर्गीकरण के अन्तर्गत तुलसी के चरित्र शिल्प का अध्ययन सुगमता से हो सकता है। इसमें व्यक्तिगत और समष्टिगत का तात्पर्य है कि ''चरित्र का अध्ययन मुख्य रूप से व्यक्ति के आधार पर किया जाता है, जिसमें व्यक्ति और उसकी परिस्थितियों के बीच होने वाली क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं की परीक्षा की जाती है और व्यक्ति के विशेष गुणों तथा अवगुणों के आधार पर मानस स्वभाव का अनुशीलन किया जा सकता है, परंतु अनेक स्थलों पर व्यक्तियों के समूह सभा, समाज, जाति, सम्प्रदाय आदि के भी स्वभाव और संस्कृति का चित्रण होता है जिनमें नाम, रूप के बिना जातिगत विशेषताओं का ही उल्लेख या चित्रण होता है जैसे प्रजा, सैनिक, योद्धा अथवा वानर, राक्षस आदि।''[7]

प्रमुख एवं गौण पात्र–

पात्रों के अभाव में कथानक का प्रवाह अवरूद्ध हो जाता है, अतः कथानक में पात्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। जिनके व्यक्तित्व विस्तार, अर्थात शील स्वभाव के निरूपण में कवि का प्रयत्न एवं दक्षता परिलक्षित होती रहती है। महाकाव्य की दृष्टि से प्रधान नहीं माने जा सकते। इस प्रकार का वर्गीकरण सर्वदा। नरपवाद या पूर्ण नहीं हो सकता है, इसमें मतभेद हो सकता है।[8] परन्तु यह तो बहुत कुछ कवि के विवेक एवं कथा तत्व पर निर्भर है कि वह किस पात्र को किस हद तक प्रमुख और किसको गौण बनाता है। डॉ. विद्या निवास गुप्त ने मानस के पात्रों का वर्गीकरण दो भागों में किया है– (1) प्रमुख पात्र और (2) गौण पात्र।

गौण पात्र उसके स्थान पर प्रमुख पात्रों के कार्य को पूर्ण करने में सहायक होते हैं, वे एक प्रकार से पूरक होते हैं। गौण पात्रों की सहायता से प्रमुख पात्रों की भूमिका अधिक स्पष्ट होती है। यहाँ एक बात ध्यान रखने योग्य है कि प्रमुख एवं गौण पात्रों का यह वर्गीकरण पात्र द्वारा कथानक में निभायी गई भूमिका के आधार पर किया गया है। प्रमुख एवं गौण पात्र के व्यक्तित्व के आधार पर नहीं। ''इस दृष्टि से राम कथा के पात्रों को दो भागों में विभाजित किया गया है।''[9] और इसी आधार पर मानस के पात्रों को भी दो भागों में विभक्त किया जा सकता है– (1) प्रमुख पात्र एवं (2) गौण पात्र।

आचार्य पं. रामचन्द्र शुक्ल ने मानस के पात्रों को सात्विक राजस और तामस इन तीन प्रवृत्तियों के आधार पर आदर्श और सामान्य दो वर्गों में विभाजित किया है। उनके अनुसार आदर्श चित्रण के भीतर सात्विक और तामस दोनों आते हैं। राजस को हम सामान्य चित्रण के भीतर ले सकते हैं। सीता, राम, भरत, हनुमान और रावण आदर्श चित्रण के भीतर जायेगें तथा दशरथ, लक्ष्मण, विभीषण, सुग्रीव और कैकेयी सामान्य चित्रण के भीतर।

आदर्श चित्रण में हम या तो यहाँ से वहाँ तक सात्विक वृत्ति का निर्वाह पायेंगें या तामस का। प्रकृति भेद सूचक अनेक रूपता उसमें न मिलेगी। सीता, राम, भरत और हनुमान ये सात्विक आदर्श हैं, रावण तामस आदर्श है–[10]

परन्तु यह वर्गीकरण श्री मद्भगवद गीता के जीव के प्रकृति के आधार[11] पर किया गया प्रतीत होता है जो मनोवैज्ञानिक दृष्टि से युक्ति युक्त नहीं हैं। डॉ0 शम्भू नाथ सिंह का मत है कि ''मानस में चरित्र चित्रण का जो स्वरूप दिखाई पड़ता है, वह हूबहू अलंकारिकों द्वारा निर्दिष्ट ढंग से नहीं है किन्तु तुलसी ने यथार्थवादी मनोवैज्ञानिक आधार पर भी चरित्र निर्मित नहीं किये हैं। उनका दृष्टिकोण धार्मिक और आदर्शवादी था। अतः उन्होनें चरित्रों की कोटियाँ (टाइप) बनाकर प्रत्येक कोटि का प्रतिनिधित्व करने वाले चरित्र निर्माण किये।[12] मानस के अन्य पात्र भी अपने–अपने स्थान और सीमा के भीतर कम महान नहीं है। उनमें से प्रत्येक किसी न किसी कोटि (टाइप) का पूर्ण प्रतिनिधित्व करता है। इसी कारण मानस के कोई दो चरित्र बिल्कुल एक समान नहीं है,[13] किन्तु यहाँ यह स्मरणीय है कि तुलसी ने अति महत्व वालें पात्रों के भी चरित्र–चित्रण में उनकी वैयक्तिक विशिष्टताओं का सरस निरूपण किया है।[14]

राम चरित मानस धार्मिक ग्रंथ के स्थान पर ऐतिहासिक ग्रंथ है उसके पात्र इतिहास एवं तत्कालीन संस्कृति का भी बोध कराते है, परन्तु डॉ. वीरेन्द्र नारायण ने मानस को प्रतीकात्मक रूप दिया है।15

निष्कर्ष

रामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने जिन पात्रों की परिकल्पना की है, वे केवल किसी पौराणिक कथा के साधारण पात्र नहीं हैं, बल्कि वे आदर्श और व्यवहारिक जीवन मूल्यों के प्रतीक हैं। तुलसीदास ने अपने पात्रों को धार्मिक आदर्शों से जोड़ते हुए, उनके चरित्रों में मनोवैज्ञानिक गहराई और सामाजिक यथार्थ का समावेश किया है। राम, सीता, भरत, हनुमान जैसे पात्रों को सात्विक और आदर्श रूप में चित्रित किया गया है, जबकि रावण को तामस प्रवृत्ति का प्रतिनिधि माना गया है। इस पात्र व्यवस्था में प्रमुख और गौण पात्रों की भूमिका स्पष्ट रूप

से विभाजित है, जो कथा को संतुलन और प्रवाह प्रदान करती है। गौण पात्रों की उपस्थिति प्रमुख पात्रों के उद्देश्य को और अधिक प्रखर बनाती है। तुलसीदास ने प्रत्येक पात्र को उसकी सामाजिक स्थिति, मनोवृत्ति और धार्मिक आस्था के अनुसार स्थान प्रदान किया है। डॉ. शम्भुनाथ सिंह के अनुसार तुलसी के पात्र किसी एकल व्यक्तित्व का चित्रण नहीं करते, बल्कि वे विभिन्न जीवन मूल्यों और सांस्कृतिक आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं। रामचरितमानस केवल धार्मिक आख्यान नहीं है, यह एक ऐसी कृति है, जिसमें तत्कालीन समाज, संस्कृति और मानव मूल्यों की गूढ़ समझ झलकती है। पात्रों के माध्यम से तुलसीदास ने एक आदर्श समाज की परिकल्पना प्रस्तुत की है, जो आज भी प्रासंगिक है।

संदर्भ–

1. रामायण कालीन समाजः शांति कुमार नानूराम व्यास, पृ0 149.
2. बाल्मीकि और तुलसीः साहित्यिक मूल्यांकन डॉ0 राम प्रकाश अग्रवाल, पृ0 117.
3. राम कथा के पात्रः डॉ0 भ0ह0 राजूरकर, पृ0 117.
4. राम कथा के पात्रः डॉ0 भ0ह0 राजूरकर, पृ0 118.
5. गोस्वामी तुलसीदास– डॉ0 माता प्रसाद गुप्त, पृ0 311
6. वाल्मीकि और तुलसी–साहित्यिक मूल्यांकन– डॉ0 राम प्रकाश अग्रवाल, पृ0 118
7. बाल्मीकि और तुलसीः साहित्यिक मूल्यांकनः डॉ0 एम0 प्रकाश अग्रवाल, पृ0 118.
8. बाल्मीकि और तुलसीः साहित्यिक मूल्यांकन, डॉ0 राम प्रकाश अग्रवाल, पृ0 118.
9. राम कथा के पात्र, डॉ0 भ0ह0 राजूरकर, पृ0 121–122
10. गोस्वामी तुलसीदास, पं0 रामचन्द्र शुक्ल, पृ0 126.
11. श्री मद्भागवत (गीता प्रेस गोरखपुर) अध्याय 4, श्लोक–5
12. हिंदी महाकाव्य का स्वरूप विकास– डॉ0 शम्भूनाथ सिंह, पृ0 537
13. हिंदी महाकाव्य का स्वरूप और विकास, डॉ0 शम्भूनाथ सिंह, पृ0 542
14. रामचरित मानस का तुलनात्मक अध्ययन– डॉ0 शिव कुमार शुक्ल, पृ0 294
15. राम कथा के पात्र, डॉ0 भ0ह0 राजूरकर, पृ0 105

Cite this Article-

'प्रिया पाण्डेय, डॉ0 सव्यसाची, ''रामचरितमानस की पात्र परिकल्पना' ***Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:01, January 2025.***

Journal URL- https://www.researchvidyapith.com/

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i1007

Published Date- 10 January 2025